विगत 10 वर्षों का विश्लेषणात्मक हल

सामान्य अध्ययन

IAS मुख्य परीक्षा प्रथम प्रश्न-पत्र

इतिहास खण्ड

SOLVED PAPER

2013 - 2022

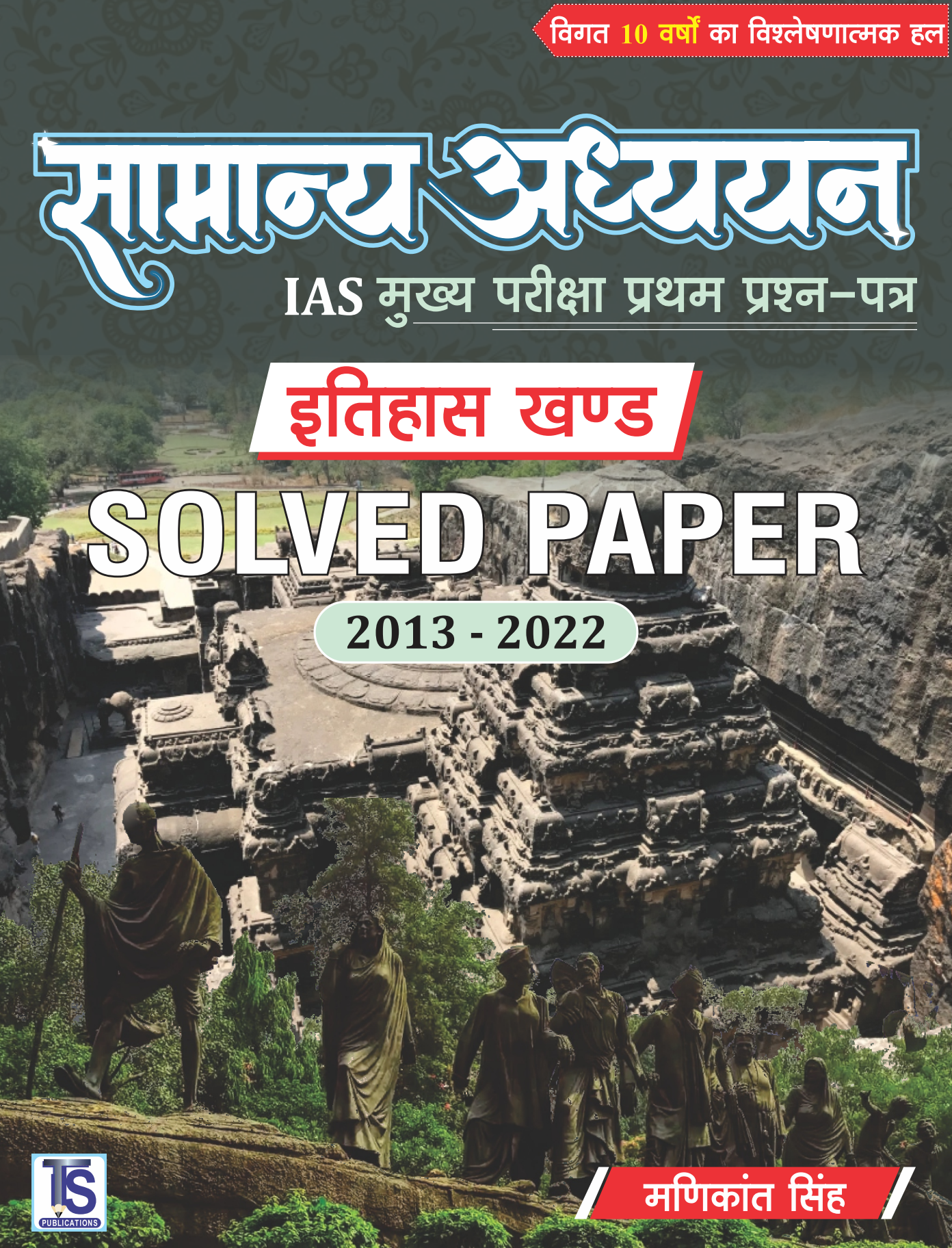

मणिकांत सिंह

TS PUBLICATIONS

© सर्वाधिकार सुरक्षित : इस पुस्तक के किसी भी भाग को छापना तथा किसी अन्य माध्यम द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

प्रथम संस्करण: 2023

मूल्य: ₹140

ISBN: 978-81-958426-8-1

Publisher :
The Study Publications

प्रकाशक:
द स्टडी पब्लिकेशन्स
210, दूसरी मंजिल, विराट भवन
(पोस्ट ऑफिस के नजदीक)
डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
दूरभाष : 011–27653672, 9999516388

नोट: इस पुस्तक को त्रुटि रहित बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है, फिर भी इसमें यदि कोई कमी अथवा त्रुटि रह जाती है तो इसमें लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। पाठक अपने त्रुटि संबंधी सुधार एवं पुस्तक को उपयोगी बनाने संबंधी सुझावों को हमारी ईमेल आई.डी.- publication@thestudyias.net पर भेज सकते हैं।

विषय सूची

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	सामान्य अध्ययन की तैयारी	01
2.	उत्तर लेखन की युक्ति	17
3.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2022	21
4.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2021	26
5.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2020	31
6.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2019	35
7.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2018	40
8.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2017	44
9.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2016	51
10.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2015	57
11.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2014	66
12.	सामान्य अध्ययनः वर्ष 2013	73

सामान्य अध्ययन की तैयारी
(इतिहास खंड)

प्रिय अभ्यर्थियों!

सिविल सेवा प्रतियोगिता परीक्षा में सामान्य अध्ययन का भाग हमेशा ही महत्वपूर्ण रहा है परंतु 2013 में संघ लोक सेवा आयोग के नए पाठ्यक्रम में सामान्य अध्ययन का भाग कहीं अधिक प्रभावी भूमिका में आ चुका है। प्रारंभिक परीक्षा में सीसैट की भूमिका कम किए जाने के पश्चात् सामान्य अध्ययन का अंश ही सफलता का निर्धारक बन चुका है, वहीं मुख्य परीक्षा के कुल 1750 अंकों में 1000 अंक सामान्य अध्ययन के पत्रों के लिए निर्धारित किए गए हैं।

फिर अगर हम सामान्य अध्ययन के चारों पत्रों का सूक्ष्म अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि इनमें लगभग 13 उपखंड शामिल हैं। प्रत्येक उपखंड अपने आप में एक स्वतंत्र विषय है। इनके साथ अगर वैकल्पिक विषय की गणना कर दी जाए तो, अध्ययन का अधिभार और भी बढ़ जाता है। यद्यपि निबंध की विषयगत परिधि पृथक नहीं है, परंतु इसके लिए भी बौद्धिक प्रशिक्षण आवश्यक है। इन सभी विषयों को जोड़े जाने पर पाठ्यक्रम का आकार काफी बड़ा हो जाता है तथा उसी के अनुकूल अभ्यर्थियों पर तैयारी का अधिभार भी।

परिमाणात्मक पहलू (Quantitative aspect) के अतिरिक्त तैयारी का एक गुणात्मक पहलू (Qualitative aspect) भी है। दूसरे शब्दों में, प्रश्न का स्वरूप भावपरक (Abstract) एवं आनुमानिक (Inferential) होने लगा है। इसलिए प्रश्न पाठ्यक्रम की कठोर परिधि के अंतर्गत ही नहीं होते, बल्कि उसकी सीमा का अतिक्रमण कर जाते। निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर इस तथ्य को समझा जा सकता है–

- महात्मा गाँधी के बिना भारत की स्वतंत्रता कितनी भिन्न हुई होती? चर्चा कीजिए।
- स्वतंत्रता भारत के लिए संविधान का मसौदा केवल तीन साल में तैयार करने के ऐतिहासिक कार्य को पूर्ण करना संविधान सभा के लिए कितना कठिन होता, यदि उसके पास भारत सरकार अधिनियम, 1935 का अनुभव नहीं होता? चर्चा कीजिए।
- भारत की विविधता के संदर्भ में क्या यह कहा जा सकता है कि राज्यों की अपेक्षा प्रदेश सांस्कृतिक इकाईयों का रूप प्रदान करते हैं? अपने दृष्टिकोण के लिए उदाहरणों सहित कारण बताइए।
- भारत की प्राचीन सभ्यता मिस्र, मेसोपोटामिया और ग्रीस की सभ्यता से इस बात में भिन्न है कि भारतीय उपमहाद्वीप की परम्पराएँ आज तक भंग हुए बिना परिरक्षित की गई हैं। टिप्पणी कीजिए।
- किस सीमा तक जर्मनी को दो विश्व युद्धों का कारण बनने का जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? समालोचनात्मक चर्चा कीजिए।

उपर्युक्त प्रश्नों का विश्लेषण करने पर आपको ज्ञात होगा कि महज अध्ययन ही पर्याप्त नहीं है, अपितु एक विशिष्ट पद्धति से अध्ययन आवश्यक है। इस पद्धति का ज्ञान हमारे यहाँ प्रचलित विश्वविद्यालयी शिक्षा के तहत प्रदान नहीं किया जाता। विश्वविद्यालयी शिक्षा में रटने को बढ़ावा दिया जाता है, सोचने की प्रवृत्ति को नहीं। इसलिए सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के मध्य अभ्यर्थी अध्ययन की पुरानी पद्धति को लेकर चलने का प्रयास करते हैं।

अर्थ है इसमें जर्मनी की भूमिका के साथ-साथ दूसरे पक्ष की भूमिका पर भी टिप्पणी करनी है। इस प्रश्न में दो खंड बनेंगे। पहले खंड में जर्मनी की भूमिका पर प्रकाश डालना होगा, फिर इसके प्रतिपक्षी देशों की भूमिका पर। यहाँ विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। प्रथम खंड का दूसरे खंड से जुड़ाव है। इसे प्वॉइन्ट में अभिव्यक्त करना संभव नहीं है। अपितु इसे विश्लेषण के माध्यम से ही व्यक्त करना संभव होगा। इसलिए जहाँ प्वॉइन्ट का भी सहारा लिया जाता है, वहाँ भी शुरूआत पैराग्राफ में ही करनी होगी। फिर बीच-बीच में भी पैराग्राफ के माध्यम से विचार व्यक्त करना होगा। इसके अतिरिक्त, यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि एक प्वॉइन्ट तथा दूसरे प्वॉइन्ट के बीच परस्पर जुड़ाव है। इस जुड़ाव को तो वाक्य लेखन में ही बाँधना होगा। अतः प्वॉइन्ट देने के बाद भी प्रत्येक प्वॉइन्ट पर कुछ पंक्तियां लिखनी पड़ेगी तथा एक प्वॉइन्ट के विचार को दूसरे प्वॉइन्ट के विचार से जोड़ना होगा।

प्रश्न संख्या-'4' भारतीय समाज से लिया गया है। इसे प्वॉइन्ट में लिखे जाने की बेहतर गुंजाइश है। प्रश्न के दोनों खंडों में अलग-अलग प्वॉइन्ट दिए जाएंगे। परंतु यहाँ भी दोनों खंडों को परस्पर जोड़ने की जरूरत होगी। तभी प्रश्न की वास्तविक माँग पूरी हो सकेगी। वस्तुतः अभ्यर्थियों को केवल एक तथ्य ध्यान रखना चाहिए कि सिविल सेवा परीक्षा की माँग उनकी आलोचनात्मक सोच (critical thinking) की परख करना है, इसलिए महज सूचना देना पर्याप्त नहीं हो सकता। परीक्षार्थी अपने तर्क को सिद्ध करने के लिए आँकड़े प्रस्तुत करते हैं, जो आवश्यक है परंतु आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण कभी विश्लेषण का विकल्प नहीं हो सकता। हाँ, हम एक आपातकालीन स्थिति की परिकल्पना कर सकते हैं। प्रश्नों की बड़ी संख्या को देखते हुए सभी प्रश्नों का उत्तर समान रूप में लिखना बड़ा कठिन हो जाता है। अतः अगर प्रश्न छूट रहे हो, तो तत्काल उन्हें प्वॉइन्ट में प्रस्तुत कर संतोष किया जा सकता है। इसलिए, उत्तर-लेखन में उन प्रश्नों को प्राथमिकता दें, जिन पर आपकी बेहतर पकड़ हो।

स्तरीय उत्तर लेखन में किन बातों को ध्यान में रखा जाए? - स्तरीय उत्तर लेखन की विधि पर विचार करने से पूर्व एक विशिष्ट प्रश्न को सामने रखा जाना आवश्यक है, ताकि उसके आलोक में उत्तर-लेखन के नियमों पर चर्चा की जा सके। इस बात को ध्यान में रखते हुए एक मॉडल प्रश्न का चयन किया जा रहा है जिसके आलोक में उत्तर-लेखन की विधि पर चर्चा की जाएगी।

प्रश्न- किस सीमा तक जर्मनी को दो विश्वयुद्धों का कारण बनने का जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? चर्चा कीजिए।

उत्तर लेखन में निम्नलिखित पहलुओं पर बल देने की जरूरत है-

उत्तर-लेखन का आरम्भ कैसे करें?

1. उत्तर-लेखन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू होता है उत्तर की शुरूआत। प्रथम वाक्य परीक्षक को परीक्षार्थी से पहला परिचय कराता है। एक अनुभवी शिक्षक प्रथम वाक्य से परीक्षार्थी की दृष्टि की गहराई को भाँप लेता है। सामान्यतः अभ्यर्थियों को सबसे अधिक कठिनाई उत्तर को आरम्भ करने में ही होती है। कई बार तो छात्र उत्तर की शुरूआत करने में ही बहुत अधिक समय लगा देते हैं।

प्रश्न की शुरूआत एक बहस की भी शुरूआत होती है, इसलिए इसका आरम्भ प्रश्न के मूल बिंदु से होना चाहिए। **'एक कमजोर शुरूआत'** तथा **'एक सशक्त शुरूआत'** में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, उपर्युक्त प्रश्न पर कोई अभ्यर्थी उत्तर का आरंभ इस प्रकार से करता है कि **'दो विश्वयुद्धों के बीच लगभग बीस वर्षों का कालान्तराल रहा तथा ये युद्ध अतिविनाशक सिद्ध हुए',** तो यह एक कमजोर शुरूआत

प्रश्नः गाँधीवादी प्रावस्था के दौरान विभिन्न स्वरों ने राष्ट्रवादी आंदोलन को सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाया था। विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।

(250 शब्द, 15 अंक)

Many voices had strengthened and enriched the nationalist movement during the Gandhian phase. Elaborate.

उत्तरः स्वतंत्रता आंदोलन में महात्मा गाँधी के प्रवेश ने इसके परिदृश्य को व्यापक तथा लोकतांत्रिक बनाया। साथ ही, इस दौरान पैदा हुई विभिन्न राजनीतिक अभिव्यक्तियों ने भी अपनी सकारात्मक भूमिका निभाई।

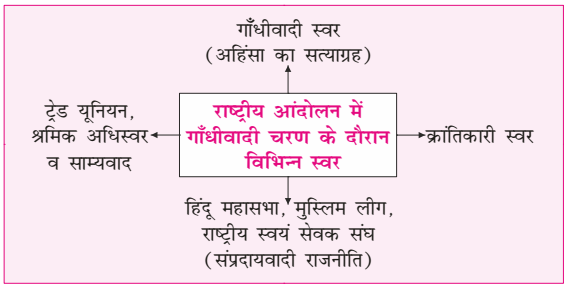

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में गाँधी युग का आरंभ 1917 से माना जाता है। इस अवधि में गाँधी जी ने अपने आरम्भिक आंदोलन चम्पारण (1917) तथा खेड़ा (1918) जैसे ग्रामीण क्षेत्रों से शुरू किये। गाँधीवादी युग के पूर्व के आंदोलनों के विपरीत गाँधी जी ने स्पष्ट रूप से अहिंसात्मक आंदोलन की नींव रखी। हिंसा व उत्पीड़न की कम संभावना ने महिलाओं को भी आंदोलन में व्यापक स्थान दिया, जैसे- असहयोग आंदोलन (1920-22) तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) में महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था।

नौजवानों का एक हिस्सा क्रांतिकारी गतिविधियों को ही भारत की स्वतंत्रता का सही रास्ता मानता था। 1926 में पंजाब में भगत सिंह के नेतृत्व में नौजवान सभा, 1928 में हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना, बंगाल में सूर्यसेन के नेतृत्व में इंडियन रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना, इन संगठनों की गतिविधियों ने जनता में जागृति, स्वतंत्रता के प्रति कर्त्तव्य, साम्राज्यवाद पर दबाव डालने, उसे पलटने और उसके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया।

स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और मुस्लिम लीग जैसे सांप्रदायिक संगठनों ने भी अपनी अहम भूमिका का निर्वहन किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि गाँधीवादी युग में ही आकर राष्ट्रीय आंदोलन में लगभग सभी वर्गों ने भाग लिया तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन सर्वसमावेशी हो सका। अतः गाँधीवादी दौर में आजादी प्राप्त करने में गाँधीवादी की तरह अन्य कई धाराओं की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

प्रश्नः 1940 के दशक के दौरान सत्ता हस्तान्तरण की प्रक्रिया को जटिल बनाने में ब्रिटिश साम्राज्यिक सत्ता की भूमिका का आकलन कीजिए।

(250 शब्द, 15 अंक)

Assess the role of British imperial power in complicating the process of transfer of power during the 1940s.

उत्तरः ब्रिटिश सत्ता भारत को स्वतंत्रता देने जैसी किसी भी कीमत पर अपने साम्राज्यवादी हितों को खोने के लिए तैयार नहीं थी। 1940 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय राजनीति में यह परिवर्तन द्वितीय विश्वयुद्ध के परिप्रेक्ष्य में आया था।

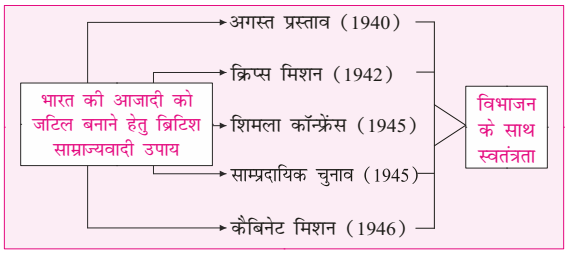

स्वतंत्रता आंदोलन की मुखरता से निपटने के लिए ब्रिटिश ने कानून बनाने से लेकर सांप्रदायिक विद्वेष फैलाने

विद्रोही राज्य थे; जैसे-जाट राज्य, सिख राज्य, अफगान राज्य और मराठा राज्य। इनके अलावा कुछ अन्य राज्य भी थे जो मुगल साम्राज्य की परिधि से बाहर थे और क्षेत्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। ये मैसूर राज्य और त्रावणकोर राज्य थे।

इन राज्यों में से किसी ने भी क्षेत्रीय राजनीति से ऊपर उठकर अखिल भारतीय स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का प्रयास नहीं किया। हालाँकि, मराठों के नियंत्रण में एक विशाल क्षेत्र था और वे अखिल भारतीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के इच्छुक थे, लेकिन चूँकि वे सामंती राजनीति और प्रतिगामी सामाजिक-आर्थिक संरचना का प्रतिनिधित्व करते थे, इसलिए वे शक्तिशाली मुगल सम्राज्य का विकल्प नहीं दे सके। फिर, पानीपत की तीसरी लड़ाई में अपनी सैन्य पराजय के बाद वे क्षेत्रीय राजनीति में ही सिमट गए।

अतः 18वीं शताब्दी के भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में राज्यों की बहुलता और खंडित राज्य व्यवस्था विद्यमान थी। इस परिस्थिति का फायदा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को मिला, जो एक व्यापारिक कंपनी के रूप में भारत आई थी, लेकिन यहाँ की परिस्थिति ने इसे राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। फिर प्लासी और बक्सर की लड़ाई में विजय के पश्चात् ब्रिटिश कंपनी एक राजनीतिक शक्ति में परिवर्तित हो गई।

इस प्रकार, 18वीं सदी में भारत में राजनीतिक विखंडन ने भारत में कंपनी के शासन का रास्ता तैयार कर दिया।

प्रश्नः क्या कारण था कि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक आते- आते 'नरमदलीय' अपनी घोषित विचारधारा एवं राजनीतिक लक्ष्यों के प्रति राष्ट्र के विश्वास को जगाने में असफल हो गए थे?
(150 शब्द, 10 अंक)

Why did the 'Moderates' fail to carry conviction with the nation about their proclaimed ideology and political goals by the end of the nineteenth century?

*(**प्रश्न विश्लेषण**- उत्तर का रास्ता बिल्कुल सीधा है क्योंकि इसमें स्पष्ट तौर पर पूछा गया है कि 'क्यों विफल हो गए थे?' अगर इसकी जगह उन्होंने पूछा होता कि 'क्या नरमदलीय भारतीय राजनीति में विफल हो गए थे?' तो फिर आपके उत्तर की दिशा बदल जाती। वहाँ आपको उनकी सीमा के साथ-साथ योगदान भी दिखाना पड़ता।)*

उत्तरः 19वीं सदी के अंत में राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करने वाली एक शीर्षस्थ संस्था के रूप में कांग्रेस की स्थापना हुई तथा कांग्रेस का आरंभिक नेतृत्व, जिसे नरमपंथी के नाम से जाना गया, आधुनिक राजनीति का मॉडल लेकर आया। परंतु अपने विशिष्ट राजनीतिक दृष्टिकोण एवं कार्यक्रम के कारण नरमपंथी नेता भारतीय राजनीति में अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न नहीं कर सके।

YEAR 2014

प्रश्न: सिंधु घाटी सभ्यता की नगरीय आयोजना और संस्कृति ने किस सीमा तक वर्तमान युगीन नगरीकरण को निवेश (Input) प्रदान किये हैं? चर्चा कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

To what extent has the urban planning and culture of the Indus Valley Civilization provided inputs to the present day urbanization? Discuss.

उत्तर: सिंधु घाटी की सभ्यता ने, जो भारतीय उपमहाद्वीप में पहली नगरीय क्रांति का प्रतिनिधित्व करती थी, भारत के भावी नगरीकरण पर भी अपना प्रभाव छोड़ा। इसकी नगर निर्माण योजना तथा नगरीय जीवन पद्धति का कुछ हद तक बाद में भी अनुकरण किया जाता रहा।

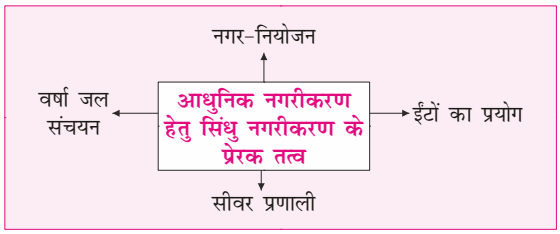

नगर निर्माण में हड़प्पाई लोगों ने आयोजना (Planning) को विशेष महत्व दिया था। प्रत्येक महत्वपूर्ण नगर दो खंडों में विभाजित था- दुर्ग एवं निचला शहर। वर्तमान नगरों में भी सरकारी संस्थानों को रिहायसी इलाके से पृथक रखने की पद्धति प्रचलित है। हड़प्पा सभ्यता के अंतर्गत सड़क, गली एवं जल प्रबंधन अनुकरणीय था। वर्तमान नगरों में भी मुख्य सड़क के निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है। उसी प्रकार, गली एवं जल निकासी की प्रणाली भी नगर निर्माण की आदर्श योजना में शामिल होती है। फिर हड़प्पाई लोगों ने बड़ी संख्या में पकाई गई ईंटों का प्रयोग किया था, वर्तमान में भी निर्माण कार्य में ईंटों का महत्व बना हुआ है। इसके अतिरिक्त हड़प्पाई नगरों की ही तरह वर्तमान भारतीय नगरों का भी बहु-सांस्कृतिक चरित्र है।

किंतु कुछ बातों में हम हड़प्पाई नगरीकरण से सीख नहीं ले पाए हैं। उदाहरण के लिए, हड़प्पाई लोगों का गवर्नेंस कहीं बेहतर प्रतीत होता है तथा उनका क्रियान्वयन पक्ष भी चुस्त रहा। अंत में वर्तमान नगर निर्माण की रूपरेखा तैयार करते हुए हमें इस बात के प्रति सावधान रहने की जरूरत है कि आखिर क्यों अपनी तमाम विलक्षणताओं के बावजूद भी हड़प्पाई नगर धारणीय (Sustainable) नहीं हो सके थे।

प्रश्न: गांधार मूर्तिकला रोमन वासियों की उतनी ही ऋणी थी जितनी कि वह यूनानियों की थी। स्पष्ट कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

Gandhara sculpture owed as much to the Romans as to the Greeks. Explain.

उत्तर: गांधार मूर्तिकला, भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण विकास क्रम को दर्शाती है। यह उत्तर-पश्चिम में तक्षशिला एवं आस-पास के क्षेत्रों में विकसित हुयी थी क्योंकि ये क्षेत्र भारतीय एवं यूनानी-रोमन संस्कृति के मिलन स्थल रहे थे। गांधार मूर्तिकला अपनी शारीरिक बनावट में मुख्यत: यूनानी तत्वों से, जबकि वेश-भूषा तथा साज-सज्जा में रोमन तत्वों से प्रभावित थी। वहीं दूसरी तरफ यह अपनी आत्मा से भारतीय थी।

In what ways did the naval mutiny prove to be the last nail in the coffin of British colonial aspirations in India?

उत्तर: द्वितीय विश्व युद्ध तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अत्यधिक तीव्रता आ गयी थी। राष्ट्रवाद की भावना सिविल सेवा, सेना, नौसेना सभी क्षेत्रों में फैल गयी थी। वहीं दूसरी तरफ एक आर्थिक साम्राज्य के रूप में ब्रिटेन का पतन हो चुका था। इसलिए फरवरी, 1946 में बॉम्बे तट पर नौसैनिक विद्रोह ने यह लगभग सिद्ध कर दिया था कि अब भारत से ब्रिटिश का प्रस्थान महज दिन और महीनों की बात है।

आर्थिक साम्राज्य की टूटन के पश्चात् ब्रिटिश के लिए भारत में अपने वास्तविक साम्राज्य को बनाये रखना कठिन हो गया था। उधर 1940 के दशक तक सिविल सेवा में भारतीयों का प्रभाव बढ़ गया था। फिर 1945 में आजाद हिंद फौज के मुकद्दमे ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत में ब्रिटिश शासन का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ, सेना, अब विश्वसनीय नहीं रह गया था। तभी 1946 के नौसेना विद्रोह ने रही सही कसर भी पूरी कर दी। यह विद्रोह बॉम्बे तट पर 22 जहाजों पर फैल गया था। सबसे बढ़कर इस विद्रोह के मध्य हिंदू, मुस्लिम और साम्यवदियों के बीच एक प्रकार की एकता देखी गयी क्योंकि जहाजों पर सभी के झंडे टंग गये। इसलिये इस घटना ने ब्रिटिश सरकार को हिलाकर रख दिया।

प्रश्न: विश्व में घटित कौन-सी मुख्य राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों ने भारत में उपनिवेश विरोधी संघर्ष को प्रेरित किया?

(150 शब्द, 10 अंक)

What were the major political, economic and social developments in the world which motivated the anti-colonial struggle in India?

उत्तर: 19वीं सदी में वैश्विक स्तर पर औद्योगिक पूँजीवाद के विकास ने भारत को बाह्य विश्व के लिए खोल दिया। अत: स्वाभाविक रूप में वैश्विक स्तर पर होने वाली प्रमुख राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक गतिविधियों का प्रभाव भारतीय राजनीति पर देखा गया।

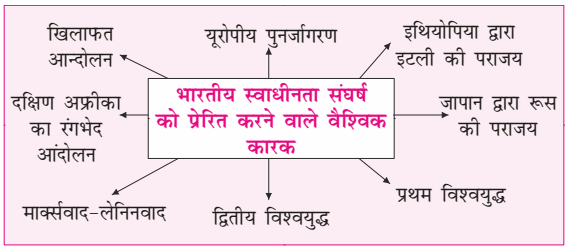

राजनीतिक घटनाक्रमों में इथियोपिया के हाथों इटली की पराजय एवं जापान के हाथों रूस की पराजय ने भारतीयों में अतिरिक्त आत्मविश्वास उत्पन्न किया तथा भारत में राजनीतिक उग्रवाद को प्रोत्साहन मिला। उसी प्रकार, प्रथम विश्व युद्ध ने जहाँ क्राँतिकारी राष्ट्रवाद को बल प्रदान किया, वहीं दूसरी तरफ इसने गाँधी के अंतर्गत रॉलेट सत्याग्रह का आधार निर्मित कर दिया। फिर द्वितीय विश्व युद्ध ने भारत में एक उग्र राजनीतिक प्रतिरोध को जन्म दिया, जिसकी अभिव्यक्ति भारत छोड़ो आंदोलन के रूप में हुई। जहाँ तक आर्थिक गतिविधियों का सवाल है, तो इस संदर्भ में हम मार्क्सवाद तथा लेनिनवाद के प्रभाव और विश्व आर्थिक मंदी को ले सकते हैं। प्रथम ने जहाँ भारत में वामपंथी राजनीति को प्रोत्साहन दिया, वहीं दूसरे ने 1930 के दशक में सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा अनेक किसान आंदोलनों का रास्ता तैयार किया। जहाँ तक सामाजिक गतिविधियों के प्रभाव का सवाल है, तो इस संदर्भ में तो दक्षिण अफ्रीका के अश्वेत आंदोलन तथा 1920 के दशक में होने वाले खिलाफत आंदोलन की चर्चा की जा सकती है। उपर्युक्त दोनों गतिविधियों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को अपने ढंग से गति प्रदान की थी। इस तरह, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन लगभग प्रत्येक युग में बाह्य कारक से प्रभावित होता रहा था।

उत्तर: अनेक यूरोपीय तथा अमेरिकी बुद्धिजीवियों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक समर्थन दिया था। इनमें से कुछ भारत आ गए तथा उन्होंने सक्रिय रूप में राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी निभायी। यद्यपि उनकी संख्या कम थी, किंतु पाश्चात्य बुद्धिजीवियों तथा राजनीतिक-सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के द्वारा ब्रिटिश शासन की आलोचना ने सरकार पर एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न किया।

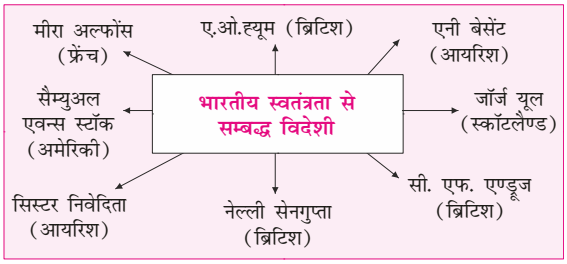

जैसाकि हम जानते हैं कि आधुनिक राजनीति से जुड़ा पहले प्रभावकारी अखिल भारतीय संगठन, कांग्रेस, की स्थापना एक अवकाश प्राप्त ब्रिटिश अधिकारी ए.ओ. ह्यूम ने की। हालांकि, ह्यूम को भारत में अधिक समय तक कार्य करने का अवसर नहीं मिला तथा वह शीघ्र ही लंदन लौट गया। फिर वह लंदन में अपने अन्य सहकर्मियों के साथ मिलकर भारत के पक्ष में जनमत को संगठित करता रहा। आगे आयरिस मूल की एक महत्वपूर्ण महिला सुधारक श्रीमती एनी बेसेन्ट ने कांग्रेस की सक्रिय राजनीति में हिस्सा लिया। वह कांग्रेस की अध्यक्षा बनीं तथा उन्होंने भारत में होमरूल आंदोलन संगठित कर कांग्रेस की राजनीति में नयी जान डाल दी। उसी प्रकार, एक ब्रिटिश मिशनरी तथा महान मानवतावादी, सी.एफ. एन्ड्रयूज, ने अपने को भारत के लिए अर्पित कर दिया। उन्होंने सामाजिक तथा राजनीतिक आंदोलन में सक्रिय रूप में हिस्सा लिया। उन्होंने श्रमिकों, कारीगरों तथा दलित वर्ग के अधिकार के मुद्दे को उठाया। गाँधी ने उन्हें 'दीनबंधु' की उपाधि दी।

नलिनी सेनगुप्त भी एक ब्रिटिश मूल की महिला बुद्धिजीवी थीं। उन्होंने भारत में असहयोग एवं बहिष्कार आंदोलन में सक्रिय रूप में हिस्सा लिया। वह कांग्रेस की अध्यक्षा भी बनीं। उसी तरह एक अमेरिकी बुद्धिजीवी, सैम्युअल एवन्स स्टॉक, ने न केवल भारत में समाज सुधार में हिस्सा लिया, अपितु राजनीति में भी दिलचस्पी दिखायी। उसने 1920 में नागपुर अधिवेशन में भाग लिया। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी निभाने वाले विदेशी मूल के लोगों की सूची यहीं समाप्त नहीं हो जाती, अपितु मीराबेन एवं सरला बेन जैसी प्रतिभाशाली महिलाओं ने गाँधी के साथ कार्य किया। सिस्टर निवेदिता रामकृष्ण मिशन में स्वामी विवेकानंद के साथ जुड़ी रहीं। मीरा अल्फोन्स नामक एक फ्रेंच महिला ने पांडिचेरी में अरविन्दो घोष के सहयोगी के रूप में कार्य किया।

इस तरह हम देखते हैं कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने केवल भारतीयों को ही नहीं, अपितु मानवतावादी सोच वाले विदेशियों को भी अपनी ओर आकर्षित किया।

प्रश्न: "अनेक प्रकार से लॉर्ड डलहौजी ने आधुनिक भारत की नींव रखी थी।" व्याख्या कीजिए।

(200 शब्द, 10 अंक)

"In many ways, Lord Dalhousie was the founder of modern India." Elaborate.

उत्तर: लॉर्ड डलहौजी भारत में व्यापक सुधार कार्यों के लिए जाना जाता है। रेलवे एवं टेलीग्राफ, आधुनिक डाक व्यवस्था, सड़क, नहर एवं मार्ग आदि के निर्माण तथा शिक्षा व्यवस्था में सुधार का श्रेय डलहौजी को दिया जाता है। इन सुधारों का अनचाहा परिणाम था भारत का आधुनिकीकरण, परंतु इसका वास्तविक उद्देश्य भारत का सक्षम औपनिवेशीकरण ही था।

Analyze the circumstances that led to the Tashkent Agreement in 1966. Discuss the highlights of the Agreement.

उत्तर: 1965 के भारत-पाक युद्ध में भारत का पलड़ा भारी हो गया था। पाकिस्तान के लिए युद्ध का संचालन कठिन हो चुका था। पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया। भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने इस युद्ध में व्यावहारिक बुद्धि का प्रदर्शन किया। उन्होंने रक्षात्मक युद्ध को छोड़कर आक्रामक रूख अख्तियार किया तथा भारतीय सेना को यह निर्देश दिया कि वह पाक के साथ लगी अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर आक्रमण कर दे। भारत की आक्रामक नीति ने युद्ध की संपूर्ण दिशा को ही मोड़ दिया। अब पाकिस्तान आक्रमण की नीति छोड़कर रक्षात्मक युद्ध लड़ने के लिए विवश हुआ। भारतीय सेना ने लाहौर एवं पंजाब पर आक्रमण कर दिया। अत: पाकिस्तान ने अपने पूर्वी मोर्चे को बचाने में पूरी ताकत लगा दी। यद्यपि यह युद्ध अनिर्णीत रहा, किंतु पाकिस्तान की स्थिति कमजोर हो गई थी। दूसरी तरफ सोवियत रूस भी भारत एवं पाकिस्तान को समझौते की मेज पर लाना चाहता था। अत: 1966 में युद्धबंदी लागू हुई तथा भारत एवं पाकिस्तान के बीच ताशकंद समझौता हुआ।

इस समझौते के माध्यम से भारत एवं पाकिस्तान के बीच स्थायी शांति लागू करने का प्रयास किया गया। यह समझौता 11 जनवरी को लागू हुआ तथा इसमें यह तय हुआ कि दोनों देश अपनी सेनाएँ 25 फरवरी तक सीमा रेखा से पीछे हटा लेंगे। यह भी तय हुआ कि दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित किए जाएंगे। हालांकि, आगे आने वाली घटनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि यह शांति अस्थायी सिद्ध हुई तथा पाँच वर्ष के पश्चात् भारत को पाकिस्तान के साथ एक और युद्ध लड़ना पड़ा। सबसे बढ़कर सोवियत रूस की मध्यस्थता में जो समझौता हुआ वह भारत के पक्ष में नहीं रहा। इस समझौते के तहत भारत को हाजी पीर का दर्रा खाली करना पड़ा। इससे भविष्य में भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ की आशंका और भी बढ़ गई। किंतु भारत इस समझौते को मानने के लिए बाध्य था क्योंकि वह सोवियत संघ को अप्रसन्न करना नहीं चाहता था। सोवियत रूस भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ रहा था। कुल मिलाकर ताशकंद समझौता एक युद्ध-विराम मात्र था। इसमें कश्मीर जैसे विवादास्पद मुद्दे के समाधान की दिशा में भी कोई प्रगति नहीं हुई।

प्रश्न: उन परिस्थितियों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए जिनके कारण भारत को बांग्लादेश के उदय में निर्णायक भूमिका का निर्वहन करना पड़ा। (200 शब्द, 10 अंक)

Critically examine the compulsions which prompted India to play a decisive role in the emergence of Bangladesh.

उत्तर: बांग्लादेश का उदय मुस्लिम लीग की पृथकतावादी नीति की, जिसने पाकिस्तान को जन्म दिया था, स्वाभाविक परिणति था। धर्म के नाम पर संगठित राष्ट्र मुस्लिमों के एक खास समुदाय को छलावा प्रतीत हो रहा था। फिर जिस प्रकार भारत विभाजन को स्वीकार करने के लिए विवश हुआ था, उसी प्रकार भारत की सरकार बांग्लादेश के मामले में उलझने के लिए विवश हुई। पाकिस्तान की गतिविधियों ने भारत की सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया था।

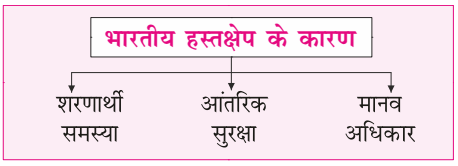

DOWNLOAD APPLICATION

for

HISTORY OPTIONAL COURSE (UPSC/PCS)

Separate Batches for Both

HINDI AND ENGLISH MEDIUM

GET IT ON Google Play

Manikant Singh

App Features

- Complete History Optional Course (for Both Medium)
- Modules wise Courses Available
- Printed Study Material Sent to Home via Post
- Free Demo Videos
- Translated Article of The Hindu, Indian Express etc.

OUR BATCHES

- Offline Batch
- Online Live Batch
- Offline Video Course
- Recorded Classroom Course
- Pen Drive Course
- Answer Enrichment Course
- Annual Practice Test Series

To download Our Application

Our website QR Code

OUR MAINS TEST SERIES PROGRAMME

- *Annual Practice Test Series*
- *Performance Enhancing Programme (PEP)*

Follow us: YouTube

TS PUBLICATIONS

210, Virat Bhawan, IInd Floor, Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9

: 9999516388, 8595638669

: info@thestudyias.net • www.thestudyias.net

978-81-958426-8-1

9 788195 842681